A–0181

Total Pages : 4 **Roll No. .....**

MASL–505

M.A. Sanskrit (MASL)

(वेद एवं निरूक्त भाग-02)

Examination, June 2025

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट :— यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) 2×19=38

नोट :— खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्नलिखित मंत्रों में से किसी **एक** मंत्र की सन्दर्भ सहित विस्तृत व्याख्या कीजिए–

(क) ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

(ख) अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।

युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम॥

2. उपनिषद् शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए उपनिषदों के वर्गीकरण एवं प्रतिपादन शैली पर विस्तृत प्रकाश डालिए।

3. ईशावास्योपनिषद् की शिक्षाओं को अपने शब्दों में लिखिए।

4. वेदांग किसे कहते हैं ? वेदांगों को स्पष्ट करते हुए उनके महत्व पर विस्तृत प्रकाश डालिए।

5. पाणिनि शिक्षा के अनुसार ह्रस्व, दीर्घ प्लुत वर्णोच्चारण प्रकार को विस्तारपूर्वक स्पष्ट कीजिए।

अथवा

दर्शन शब्द को स्पष्ट करते हुए भारतीय दर्शन के प्रमुख उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न) 4×8=32

नोट :– खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. ईशावास्योपनिषद् के अनुसार 'ईश्वर' क्या है ? विवेचना कीजिए।

अथवा

ईशावास्योपनिषद् का सार अपने शब्दों में लिखिए।

2. मुण्डकोपनिषद् में वर्णित परा एवं अपरा विद्या का वर्णन कीजिए।

अथवा

मुण्डकोपनिषद् के नामकरण के कारकों का विवेचन कीजिए।

3. उपनिषदों के अनुसार सम्भूति एवं असम्भूति के भेद को स्पष्ट कीजिए।

4. तैत्तिरीयोपनिषद् भृगुवल्ली में वर्णित पंचकोशों का वर्णन कीजिए।

5. वेदांगों के अन्तर्गत व्याकरण शास्त्र के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

अथवा

वेदांगों के अन्तर्गत निरूक्त शास्त्र के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

6. भारतीय दर्शन में सांख्य एवं योग के प्रभाव को प्रतिपादित कीजिए।

7. श्रवण और मनन आत्मोत्कर्ष में किस प्रकार सहायक हैं बृहदारण्यकोपनिषद् के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

निम्नलिखित श्लोक का हिन्दी अर्थ लिखिए–

माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।

धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठका गुणाः॥

8. ऋग्वेद एवं सामवेद से सम्बन्धित शिक्षा ग्रन्थों का विस्तृत परिचय दीजिए।

अथवा

शिक्षा ग्रंथों का वर्णन करते हुए चारों वेदों के शिक्षा ग्रंथों पर प्रकाश डालिए।

****